

चरको

॥७८

ध॥ जुवोनी जत पथी तप पगट रवी ॥ माहा अज्ञ  
अरुपदी नरुप हवी ॥ केहं कुवेर केवल एम अ  
नुभवी ॥ सतगुरु मलतां जीवदशा संसेती भ्रां  
ती छुटे ॥ ५ ॥ पदा ॥ ३ ॥ संपुर्णः ॥ समाप्तेः ॥  
राग केर रे कताली पते देषदरी यावकी लेहे सअ  
नंतहे ॥ तीरथी बाहरतो नवजा से ॥ केहं कुवेर  
जक बुंसकी लेहे सहे ॥ संतसा चामले जालपा  
से ॥ १ ॥ देरवतु आपमे बुंसमे लोवसे ॥ सुपतनु सु  
खतु देने त्यागी ॥ संतके सीषरमे मेहे लता राण  
ना ॥ रुगमग जोत्य जांहां रही छे जागी ॥ केहं कुवे  
रतु नीरषवामे हे लमे ॥ अनहलनादकी धुंन्य  
त्यागी ॥ २ ॥ प्रीत्य कीरी त्यन जांन सके को ई ॥ ध्यां  
नको मांन समान लषे ॥ लक्ष अलक्षन पक्षपषे  
पुनी वैतट त्यावीना न एक भषे ॥ सुध्यज्ञान लहा  
वीना मंनध रे ॥ केहं सत कुवेर को होय अषे ॥ ३ ॥  
केसे में जांन सकु गुरुज्ञान कुमांन को बांन ल  
ग्यो चीत मांही ॥ नेक नरे हेत सरी रकी ॥ धीरन  
धीरत व्यापतत्री गुण केरी ॥ लक्ष अलक्षन पक्ष  
अपक्षन ॥ रागन देषन सेषन जांही ॥ कीनी गुरु  
मेहे सभया मंनधे ससके नही जांही ॥ केहं कुवे  
रमी दा अंधेर फरे नही फेर ॥ आत्म बुंस लर मोघ

४७

टमोही ॥ ४ ॥ रेकता ॥ १ ॥ संपुर्णः ॥ समाप्तः ॥  
 अथपदशगमेवाडोपदलीष्यतेमाहापदकेरुरेव  
 रणवसुकरुरे ॥ जांहांनवपीहोचेमननेवलीवा  
 एषा ॥ सांनेसमकाव्यारेजंतकेसुषदेवनेरे ॥ पुंम  
 रूपीजंतमतहीनीरवांएषा ॥ माहा ॥ १ ॥ शीवेस  
 मकाव्यारेउंमीयाएकांतसुरे ॥ कहसुपदनीरालं  
 वनीरधार ॥ संमजीसमायांरेसस्वसरूपमां  
 रे ॥ देतटलुउंमीयातएनुसारा ॥ माहा ॥ २ ॥ अ  
 षीअषेपदनेरेअहोनीसईछतारे ॥ उरवीषेबेहे  
 वैरागचक्चुरा ॥ कासीपुरीमांरेपुरणयोतेयया  
 रे ॥ मत्यागुरुबंसांतंमरपुरा ॥ माहा ॥ ३ ॥ तेपदजां  
 एरेसंसैसौटलेरे ॥ मीटीजायआपापरतीरेतां  
 ए ॥ सबघटभासेरेपुरणपरमात्मांरे ॥ कीटबंहा  
 आद्येएकपरमांए ॥ ४ ॥ सुतासीधुनीरेससुंदर  
 मांभलीरे ॥ लेवानेअरणवकेरोअंत ॥ एणतव  
 आवीरेतेपाछीफलीरे ॥ उनसुनीसहीतगली  
 गयुतंत ॥ माहा ॥ ५ ॥ अंडभीमीतांरेजंमपवंनेम  
 सांरे ॥ अणईछोसेहेजेथायसलोक ॥ कुवेरक  
 बीरीरेअंडाअद्यकुगणारे ॥ बोलेएतोचैहीतंत  
 वायुजोग ॥ माहापदकेरुरेवरणवसुकरुरे ॥ ६  
 ॥ पदः ॥ १ ॥ इतीश्रीसंपुर्णः ॥ समाप्तः ॥